Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 16

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

23 जून 2016 ई

17 रमज़ान 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

अल्लाह तआला ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण से मुक्ति को संबद्ध कर दिया है तो बेईमानी है कि इन स्पष्ट प्रमाण वाली आयतों से अवहेलना करके मुतशाबेहात की ओर दौडें। मुतशाबेहात की ओर वही लोग दौड़ते हैं जिनके दिल पाखंड के रोग से बीमार होते हैं।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

(15) اَلَمۡ یَعۡلَمُوۡۤا اَنَّہٗ مَنۡ یُّحَادِدِ اللّٰہَ وَ رَسُوۡلَہٗ فَاَنَّ لَہٗ نَارَ جَہَنَّمَ خَالِدًا فِیۡہَا ؕ ذٰلِکَ الۡخِزۡیُ الۡعَظِیۡمُ (अत्तौब: 63)

(अनुवाद) क्या ये लोग नहीं जानते कि जो व्यक्ति ख़ुदा और रसूल का विरोध करे ख़ुदा उसे जहन्नम में डालेगा और वह हमेशा इस में रहेगा यह एक बड़ा अपमान है। अब बतलाएं मियां अब्दुल हकीम खान कि उनकी क्या राय है। ख़ुदा के इस आदेश को स्वीकार करेंगे या बहादुरी से इन आयतों के डराने को अपने सिर पर ले लेंगे?

(16) وَ اِذۡ اَخَذَ اللّٰہُ مِیۡثَاقَ النَّبِیّٖنَ لَمَاۤ اٰتَیۡتُکُمۡ مِّنۡ کِتٰبٍ وَّ حِکۡمَۃٍ ثُمَّ جَآءَکُمۡ رَسُوۡلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَکُمۡ لَتُؤۡمِنُنَّ بِہٖ وَ لَتَنۡصُرُنَّہٗ ؕ قَالَ ءَاَقۡرَرۡتُمۡ وَ اَخَذۡتُمۡ عَلٰی ذٰلِکُمۡ اِصۡرِیۡ ؕ قَالُوۡۤا اَقۡرَرۡنَا ؕ قَالَ فَاشۡہَدُوۡا وَ اَنَا مَعَکُمۡ مِّنَ الشّٰہِدِیۡنَ

(आले इम्रान 82)

(अनुवाद) और याद कर जब ख़ुदा ने सारे रसूलों से वादा लिया कि जब मैं तुम्हें किताब और बुद्धि दूंगा। और फिर तुम्हारे पास अंतिम समय में मेरा रसूल आ जाएगा जो तुम्हारी किताबों की पुष्टि करेगा। तुम्हें उस पर ईमान लाना होगा और उसकी मदद करनी होगी और कहा, क्या तुम ने स्वीकार कर लिया और इस अहद पर स्थापित हो गए। उन्होंने कहा कि हम ने स्वीकार कर लिया। तब ख़ुदा ने कहा कि अब अपने एक बयान के गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ इस बात का गवाह हूँ।

अब स्पष्ट है कि नबी तो अपने समय पर देहान्त पा गए थे यह आदेश हर नबी की उम्मत के लिए है कि जब वे रसूल प्रकट हो तो उस पर ईमान लाओ वरना पूछा जाएगा अब बतलाएं मियां अब्दुल हकीम खान नीम मुल्ला ख़तरा ईमान! अगर केवल खुश्क तौहीद से मुक्ति मिल सकती है तो ख़ुदा तआला ऐसे लोगों से क्यों बदला लेगा जो यद्यपि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान नहीं लाते मगर तौहीद को स्वीकार करते हैं।

इसके अतिरिक्त तौरात अपवाद अध्याय 18 में एक यह आयत मौजूद है कि जो व्यक्ति इस आख़िरी नबी को नहीं मानेगा मैं उससे मांग करूंगा। तो अगर केवल तौहीद ही काफी है तो यह मांग क्यों होगी? क्या ख़ुदा तआला अपनी बात को भूल जाएगा? और मैंने संक्षेप में पवित्र कुरआन में से यह आयात लिखी हैं वरना पवित्र कुरआन इस प्रकार की आयतों से भरा है अत: पवित्र कुरआन इन्हीं आयतों से शुरू होता है जैसा कि वह कहता है। اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ * अर्थात हे हमारे ख़ुदा हमें रसूलों और नबियों की राह पर चला जिन पर तेरा पुरस्कार और सम्मान हुआ है।

अब इस आयत से कि जो पांच समय नमाज़ में पढ़ी जाती है स्पष्ट है कि ख़ुदा के आध्यात्मिक पुरस्कार जो अनुभूति और इलाही मुहब्बत सिर्फ रसूलों और नबियों के माध्यम से ही मिलता है न किसी और माध्यम से हमें पता नहीं कि मियां अब्दुल हकीम खान नमाज़ भी पढ़ते हैं या नहीं पढ़ते। अगर पढ़ते होते तो संभव नहीं था कि इन आयतों के अर्थ से बेखबर रहते मगर जब उनके निकट केवल तौहीद ही काफी है तो फिर नमाज़ की क्या जरूरत है। नमाज़ तो रसूल की इबादत का एक तरीका बतलाया गया है जिस को रसूल के अनुसरण से कोई उद्देश्य नहीं उस को नमाज़ से क्या उद्देश्य उस के निकट तो तौहीद वाला ब्रह्मो भी मुक्ति पाने वाला है क्या वे नमाज़ पढ़ते हैं। और जब कि उसके निकट एक व्यक्ति इस्लाम से मुर्तद होकर भी अपने खुश्क एकेश्वरवाद से मुक्ति पा सकता है* और ऐसा आदमी भी बचाया जा सकता है जो यहूदी या ईसाई या आर्यों से तौहीद को मानने वाला है चाहे इस्लाम का विरोद्धी और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का दुश्मन है तो उसकी यही राय होगी कि नमाज़ निरर्थक और रोज़ा व्यर्थ है लेकिन एक मोमिन के लिए तो केवल यही आयत काफी है जिससे पता चलता है कि आध्यात्मिक धन के मालिक केवल नबी और रसूल हैं और हर एक को उनके अनुकरण से हिस्सा मिलता है।

फिर सूर: बक़र: के शुरू में ये आयत हैं।

ذٰلِکَ الۡکِتٰبُ لَا رَیۡبَ ۛۚ فِیۡہِ ۛۚ ہُدًی لِّلۡمُتَّقِیۡنَ ۙ الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡغَیۡبِ وَ یُقِیۡمُوۡنَ الصَّلٰوۃَ وَ مِمَّا رَزَقۡنٰہُمۡ یُنۡفِقُوۡنَ ۙ وَ الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ بِمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡکَ وَ مَاۤ اُنۡزِلَ مِنۡ قَبۡلِکَ ۚ وَ بِالۡاٰخِرَۃِ ہُمۡ یُوۡقِنُوۡنَ ؕ اُولٰٓئِکَ عَلٰی ہُدًی مِّنۡ رَّبِّہِمۡ ٭ وَ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ

(अल्बकर: 3- 6)

(अनुवाद) यह किताब जो संदेह से मुक्त है मुत्तिकयों के लिए मार्ग दर्शन है और मुत्तकि वे लोग हैं जो ख़ुदा पर (जिस की हस्ती सूक्ष्म से सूक्ष्मतर है) ईमान लाते हैं और नमाज़ की स्थापना करते हैं और अपने मालों में से ख़ुदा के रास्ते में कुछ देते और इस पुस्तक पर विश्वास करते हैं जो तेरे पर नाज़िल हुई और साथ ही उन किताबों पर विश्वास करते हैं जो तुझ से पहले नाज़िल हुईं वही लोग ख़ुदा द्वारा निर्देशित हैं और वही हैं जो उद्धार पाएँगे।

अब उठो और आंख खोलो हे मियां अब्दुल हकीम मुर्तद! कि ख़ुदा तआला ने इन आयतों में फैसला किया है और मुक्ति पाना केवल इसी बात निर्धारित कर दिया है कि लोग ख़ुदा तआला की किताबों पर ईमान लाएं और उसकी सेवा करें। ख़ुदा तआला के वाणी में विपरीत अर्थ और मतभेद नहीं हो सकता इसलिए जबकि अल्लाह तआला ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण से मुक्ति को संबद्ध कर दिया है तो बेईमानी है कि इन स्पष्ट प्रमाण वाली आयतों से अवहेलना करके मुतशाबेहात की ओर दौडें। मुतशाबेहात की ओर वही लोग दौड़ते हैं जिनके दिल पाखंड के रोग से बीमार होते हैं।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 133 -136)

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी(अ) अहमदिया जमाअत के संस्थापक कोई नया धर्म नहीं लाए।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरूद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि

(27 दिसम्बर 1938 ई जलसा सालाना कादियान की तकरीर का एक अंश) (भाग -1)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जब दुनिया में आए और दावा किया कि मैं मसीह मौऊद तो वास्तव में आप कोई नई चीज़ नहीं लाए थे। अर्थात् जमाअत अहमदिया के जो संस्थापक हैं उनका यह दावा नहीं है कि वे कोई नया धर्म लाए हैं बल्कि तथ्य यह है कि लोग कुरआन को भूल चुके थे और कुरआन भूलने के कारण से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत उनके दिलों में ठंडी हो चुकी थी, इस्लाम की सेवा के लिए उनके दिल में कोई उत्साह नहीं बचा था और उनकी हालतें इतनी बदल गई थीं कि वह धर्म का पालन करने से बचते थे। तब अल्लाह तआला ने उनके इन आध्यात्मिक रोगों का इलाज करने के लिए रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिकों और आज्ञाकारियों में से एक व्यक्ति को चुना और उसे कहा कि हम तुम्हें इस्लाम की सेवा के लिए खड़ा करते हैं तुम जाओ और लोगों को रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में प्रवेश करो। यह दावा था जो आपने किया और यह काम था जिसके लिए आप भेजे गए। जब आप ने लोगों के सामने यह दावा पेश किया और कहा कि मुझे ख़ुदा तआला ने दुनिया की हिदायत के लिए भेजा है और मेरा नाम ख़ुदा तआला ने मसीह मौऊद रखा तो लोगों ने इस पर आपत्ति जताई और कहा कि मसीह तो आसमान पर बैठा है और वही फिर दुनिया के सुधार के लिए आएगा और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया कि मुसलमानों में मरियम प्रकट होगा और वह "हकम" "अदल" होगा और मरियम से वही मरियम अभिप्राय है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भव से छह सौ साल पहले दुनिया में आया है। इसलिए जब कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार मसीह मरियम ने जन्नत से प्रकट होना और उसी ने सुधार का काम करना है तो तुम जो पंजाब में रहते हो और पंजाब की एक बस्ती कादियान में पैदा हुए हो कैसे मसीह मौऊद हो सकते हो जब तुम कहते हो कि तुम मसीह मौऊद हो तो दो बातों में से एक बात ज़रूर है। या तो तुम पागल हो या लोगों को जानबूझ कर धोखा और फरेब देते हो। यह आपत्ति थी कि लोगों ने आप के दावे पर कीं। आप ने इसका यह जवाब दिया कि यदि मसीह मरियम जीवित होता तो वास्तव आप के दिल में यह शंका उठ सकती था कि जब इस दुनिया में अभी आना है तो उसकी जगह कोई और व्यक्ति कैसे खड़ा हो गया है या यदि मसीह मरियम के आने में रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त होती और मसीह की भी इज़्ज़त होती तो कहा जा सकता था कि ख़ुदा और रसूलों का सम्मान दुनिया में प्रकट करने के लिए मसीह मरियम को ही फिर से भेज दिया। मगर सत्य यह है कि इन दोनों में से कोई बात भी सही नहीं।

अत: हज़रत मिर्ज़ा साहब ने बताया कि मसीह मरियम मर चुके हैं और उनकी मृत्यु कुरआन से प्रमाणित है। इसलिए उनके मृत्यु पा जाने के कारण अब उनका दुनिया से कोई संबंध नहीं है और न ही वह फिर से इस दुनिया में आ सकते हैं। इसलिए आप ने एक स्पष्ट प्रमाण दिया कि सूरे माइदा के अंत में अल्लाह तआला कहता है कि क़यामत के दिन में मसीह मरियम से पूछूंगा कि तुझे और तेरी माँ को जो दुनिया में ख़ुदा बनाया गया है तो क्या तूने लोगों से यह कहा था कि मुझे और मेरी माँ को ख़ुदा मानो और हमारी इबादत करो। आप लोगों को पता होगा कि ईसाई ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा कहते हैं और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में कुछ समुदाय भी थे जो हज़रत मरियम सिदीका की ख़ुदाई को मानते थे और वस्तुत: तो रोमन कैथोलिक वाले अभी भी हज़रत मरियम की तस्वीर आगे सिजदा करते और उनसे दुआएं करते हैं। इसलिए अल्लाह कहता है कि हम क़यामत के दिन पूछेंगे कि क्या तुमने कहा था कि मुझे और मेरी माँ को ख़ुदा बनाओ। इसका हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम यह जवाब देंगे कि हे मेरे अल्लाह यह बात बिल्कुल ग़लत है। जब तक मैं इन लोगों के बीच जीवित रहा तब तक तो वह तौहीद के ही मानने वाले थे और उन्होंने कभी शिर्क को नहीं अपनाया था मगर जब तूने मुझे मृत्यु दे दी तो मेरा लोगों से सम्बन्ध न रहा फिर तू ही उनका कार्यवाहक था 'मुझे तो कुछ पता नहीं कि वे मेरे बाद क्या किया। यह जवाब है कि क़यामत के दिन ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला को देंगे और कुरआन में लिखा हुआ है। हज़रत मिर्ज़ा साहब ने इस से तर्क करते हुए कहा कि देखो जी उठने के दिन हज़रत मसीह जो यह जवाब देंगे तो यह सच्चा जवाब होगा या झूठा। हर व्यक्ति समझ सकता है कि ख़ुदा तआला का नबी कभी झूठ नहीं बोल सकता लेकिन तुम्हारे ईमान के अनुसार अगर वह आसमान पर जीवित हैं और फिर दुनिया में आएंगे तो अवश्य वह अपने लोगों के हालात से भी परिचित हो जाऐंगे क्योंकि तुम्हारा भी ईमान है कि हज़रत मसीह आकर सलीबों को तोड़ेंगे हैं, सूअरों को मार डालेंगे और ईसाइयों को मजबूर करके मुसलमान बनाएंगे जिससे ज़ाहिर है कि उन्हें मालूम हो जाएगा कि ईसाई उनकी खुदाई के मानने वाले हैं अब कैसे संभव है कि दुनिया मैं तो आकर वह सभी परिस्थितियां अपनी आँखों से देख जाएं और उनका सुधार भी करें, लेकिन ख़ुदा को यह जवाब दें कि हे ख़ुदा मुझे तब तो कुछ पता नहीं कि लोग क्या करते हैं। ख़ुदा उन्हें नहीं कहेगा कि ख़ुदा के बंदे तू तो चालीस साल फिर से दुनिया में रहा। तूने सूअर क़त्ल किए, तूने सलीबें तोड़ीं तूने ज़बरदस्ती उन को मुसलमान बनाया मगर आज कह रहा है कि मुझे कुछ पता नहीं कि लोग मेरे बाद क्या करते रहे और अगर वह फिर से दुनिया में आकर रहें और ख़ुदा से वही सवाल किया कि कुरआन में सूचीबद्ध है तो बजाय वह जवाब देने के जो कुरआन में उल्लेख आता है वह यह भी कह सकते हैं कि ख़ुदा ! यह सवाल अजीब है आप ने तो ख़ुद मुझे दुनिया में भेजा। मैं ने वहाँ जाकर सूअर मारे, सलीबें तोड़ीं शिर्क और कुफ्र को नष्ट किया मगर आज बजाय आप मुझे पुरस्कार देते उलटा नाराज़ हो रहे हैं। जैसे ही उदाहरण होती कि "नेकी बर्बाद गुनाह अनिवार्य। "

मैंने तो दुनिया में इतनी परेशानी उठाई कि दिन रात एक करके सूअर मारता रहा 'सलीबें तोड़ता रहा' ईसाइयों को मुसलमान बनाता रहा और आज इस के स्थान पर कि कोई पुरस्कार देने के मुझे डांटा जा रहा है कि क्या तूने यह शिर्क की शिक्षा दी थी? मगर वह उन जवाबों में से कोई जवाब नहीं देते। वह अगर कहते हैं कि मुझे उनके गुमराह होने का कोई पता नहीं। वह अगर गुमराह हुए हैं तो मेरे बाद हुए हैं 'मेरी मौजूदगी में नहीं हुए। इसलिए कुरआन में साफ शब्दों में आता है कि मेरे मरने के बाद जो कुछ हुआ है हुआ है मेरे जीवन में नहीं हुआ। अब सवाल यह है कि क्या ईसाई हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को ख़ुदा मानते हैं या नहीं? यह एक मोटी बात है कि कोई उसका इनकार नहीं कर सकता। हर ईसाई से पूछ कर पता किया जा सकता है वह यही कहेगा कि हज़रत मसीह ख़ुदा थे। अब अगर कुरआन शरीफ ख़ुदा तआला की किताब है, अगर सूरह माइदा ख़ुदा तआला द्वारा ही रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई थी तो वह यह कह रही है कि क़यामत के दिन हज़रत मसीह यह कहेंगे कि जो कुछ हुआ मेरी मौत के बाद हुआ जीवन में नहीं हुआ। अब दो बातों में से एक बात ज़रूर है। या तो ईसा अलैहिस्सलाम अभी तक नहीं मरे और ईसाई बिगड़े हैं या ईसा अलैहिस्सलाम वास्तव में मर चुके हैं और ईसाई मान्यताओं में बिगाड़ उनकी मृत्यु के बाद हुआ है। हजरत मिर्ज़ा साहब ने इस बात को लोगों के सामने पेश किया और कहा कि इन दो बातों में से एक बात तय करो। तुम यह बताओ कि ईसाई बिगड़े हैं या नहीं अगर ईसाई नहीं बिगड़े और वह सच है तो तुम्हारा भी कर्तव्य है कि तुम ईसाई हो जाओ क्योंकि वह तो तुम्हारे कहने के अनुसार सीधे रास्ते पर कायम हैं और ईसा अलैहिस्सलाम तभी जीवित हो सकते हैं जब ईसाई बिगड़े न हों। इसलिए मुसलमान अब फैसला कर लें कि ईसाई बिगड़े हुए हैं या नहीं अगर वे बिगड़े हुए नहीं तो मुसलमानों को चाहिए कि वह ख़ुद भी ईसाई हों और अगर वह बिगड़े हुए हैं और अगर यह दिखाई दे रहा है कि ईसाई ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा और ख़ुदा का पुत्र बताते हैं तो अवश्य यह भी मानना पड़ेगा कि ईसा अलैहिस्सलाम मर चुके हैं क्योंकि कुरआन यही कहता है कि ईसाइयों में यह तथ्य कि हज़रत मसीह और मरियम सिद्दीक़ा ख़ुदा हैं ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु के बाद उत्पन्न हुआ उनके जीवन में पैदा नहीं हुआ। मानो जो ईसा को जीवित समझते हैं उन्हें मानना पड़ेगा कि ईसाई सच्चाई पर हैं और उन्हें इस्लाम से मुर्तद

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला मोमिनों को फरमाता है कि अपने ऊपर हर समय नज़र रखें और देखते रहो कि तुम कहीं शैतान के नक्शे कदम पर तो नहीं चल रहे। इंसान जब अल्लाह तआला के ज़ाहिर में किसी छोटे से छोटे आदेश से भी दूर जाता है तो शैतान की ओर बढ़ रहा होता है तो बहुत सावधान होने की ज़रूरत है।

शैतान से बचने के लिए घरों में ही ऐसे मोर्चे बनाने की ज़रूरत है कि उसके प्रत्येक हमले से न केवल बचो बल्कि उसके हमले का यह जवाब भी दिया जाए। शैतान के प्यार को प्यार समझ कर उसे जीवन में प्रवेश न करें बल्कि हर समय इस्तिग़फ़ार करते हुए अल्लाह की शरण में आने की हर अहमदी को कोशिश करनी चाहिए। सबसे बड़ी शरण शैतान से बचने की अल्लाह ही है। इसलिए इस बिगड़े हुए ज़माने में इस्तिग़फ़ार करते हुए अल्लाह तआला की शरण में आने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि इस्तिग़फ़ार ही वह माध्यम है जिससे अल्लाह की शरण में आदमी आ सकता है।

प्राय घरों की समीक्षा कर लें। बड़े से लेकर छोटे तक सुबह फजर की नमाज़ इसलिए समय पर नहीं पढ़ते कि देर रात तक या तो टीवी देखते रहे या इंटरनेट पर बैठे अपने कार्यक्रम देखते रहे। परिणाम स्वरूप सुबह आंख नहीं खुली बल्कि ऐसे लोगों को ध्यान भी नहीं होता कि सुबह नमाज़ के लिए उठना है।

शैतान केवल एक सांसारिक कार्यक्रम के लालच में नमाज़ से दूर ले जाता है और इसके अतिरिक्त भी इंटरनेट एक ऐसी चीज़ है जिस में विभिन्न प्रकार के जो कार्यक्रम हैं, फिर एपलीकेशन हैं, फोन आदि के माध्यम से या iPad के माध्यम से, इन में डालता चला जाता है।

ग़लत आनन्द और प्रत्येक प्रकार की व्यर्थ बातों और शैतान के हमलों से बचने के लिए आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक संक्षिप्त दुआ।

अल्लाह तआला ने हमें एम.टी.ए प्रदान फरमाया है अल्लाह तआला ने हमें जमाअत के आध्यात्मिक, ज्ञान वर्धक कार्यक्रमों के लिए वेब साइट भी दे दी है। अगर हम अधिक ध्यान इस ओर करें हैं तो फिर हमारा ध्यान इस ओर रहेगा जिससे हम अल्लाह के क़रीब होने वाले होंगे और शैतान से बचने वाले होंगे।

हर अहमदी घर को अनिवार्य और आवश्यक बनाना चाहिए कि सभी घर के सदस्यों मिलकर हर हफ्ते कम से कम एम.टी.ए पर ख़ुत्बा ज़रूर सुना करें और इसके अतिरिक्त कम से कम एक घंटे दैनिक एम.टी ए के दूसरे कार्यक्रम भी देखें। जिन घरों में इस पर अनुकरण हो रहा है वहाँ अल्लाह तआला की कृपा से नज़र आता है कि पूरा परिवार धर्म की ओर है। बच्चे भी धर्म सीख रहे हैं और बड़े भी धर्म सीख रहे हैं। इस पर जो भी पालन करेगा वह जहाँ धार्मिक लाभ ले रहा होगा इससे शैतान से भी दूरी होगी।

जमाअत के निज़ाम और विशेष कर के ज़ैली तंज़ीमों के सदस्यों को संभालने और जमाअत से मज़बूती के साथ जोड़ने के लिए व्यावहारिक कोशिश करने का मार्ग दर्शन और विशेष नसीहत।

उहदेदार अपने व्यवहार ऐसे रखें कि प्यार से उन्हें धर्म के साथ जोड़ें मस्जिद के साथ जोड़ें अपनी मज्लिस के साथ जोड़ें जमाअत के साथ जोड़ें वरना शैतान तो इस अवसर में है कि जहां कोई कमज़ोर हो जहां किसी को किसी अधिकारी के ख़िलाफ कोई शिकवा पैदा हुआ और हमला करके उसे अपने काबू में करूं।

विशेष रूप से जिन के ज़िम्मे धार्मिक सेवा का काम किया गया है जमाअत के लोगों के मार्गदर्शन और प्रशिक्षण का काम जिन को सौंपा है अपने कथन तथा कर्म को अल्लाह की इच्छा के अनुसार ढालने की कोशिश करें और अल्लाह से शुद्ध होकर दुआ करें कि अल्लाह उनके कारण से किसी को शैतान की झोली में न जाने दे बल्कि किसी तरह भी कोई जमाअत का व्यक्ति भी शैतान के पीछे चलने वाला न हो।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 20 मई 2016 ई. स्थान - मस्जिद नासिर, गोटन बर्ग, सवीडन

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَ مَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِ ؕ وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّ لٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (सूरः अन्नूर :22)

ऐ वे लोगो जो ईमान लाए हो शैतान के नक्शे कदम पर मत चलो और जो कोई शैतान के कदमों पर चलता है तो वह निश्चित रूप से निर्लज्जता और अवांछित बातों का आदेश देता है। अगर अल्लाह तआला की कृपा और उस की दया तुम पर न हो तो तुम में से कोई भी कभी पवित्र न हो सकता। लेकिन अल्लाह तआला जिसे चाहता है पवित्र कर देता है और अल्लाह तआला सुनने वाला और बहुत ज्ञान रखने वाला है।

अल्लाह तआला ने इस आयत के अतिरिक्त भी आदम की संतान और मोमिनों को शैतान से बचने और उस के कदम पर न चलने की चेतावनी दी है। यह आदेश इसलिए है कि शैतान ख़ुदा तआला का नाफरमान (अवज्ञाकारी) है। अल्लाह तआला की आज्ञाओं के विपरीत चलता है। उन से विद्रोह करता है और स्पष्ट है कि जो ख़ुदा तआला का अवज्ञाकार और उसकी आज्ञाओं के ख़िलाफ चलने वाला हो वह अपने पीछे चलने वालों को भी वही कुछ सिखाएगा जो ख़ुद करता है और फिर इसका नतीजा यह निकलेगा कि शैतान ख़ुद तो जहन्नम का ईंधन है ही, अपने पीछे चलने वालों को भी जहन्नम का ईंधन बना देता है। अल्लाह तआला ने शैतान को स्पष्ट रूप से फरमाया है कि तेरे पीछे चलने वालों को जहन्नम से भरूंगा, उनका ठिकाना जहन्नम होगा। यह सब कुछ खोलकर बयान कर अल्लाह तआला फरमाता है कि क्या मनुष्य को इसके बाद भी समझ नहीं आती कि शैतान तुम्हारा खुला खुला दुश्मन है। अतः इस दुश्मन से बचो।

एक तो वे लोग हैं जिन्हें न धर्म की कुछ परवाह है न उन्हें यह पता है कि जहन्नम क्या है और जन्नत क्या है? न उन्हें ख़ुदा तआला की हस्ती पर विश्वास है। वे न तो धर्म की बातों को समझते हैं न समझना चाहते हैं या अगर कुछ लोग उन देशों में इस्लाम के बारे में पढ़ते भी हैं केवल ज्ञान की हद तक या यह बताने के लिए कि हमें धर्म और इस्लाम के बारे में पता है, जबकि उनका ज्ञान केवल सतही और किताब का होता है। कुछ ऐसे भी हैं जो आरोप और आलोचना की दृष्टि से कुरआन पढ़ते हैं और इस्लाम के बारे में जानकारी लेते हैं लेकिन इस शिक्षा और गुणों से कुछ सीख प्राप्त नहीं करते। न ही शैतान के पंजे से निकलते हैं न ही उन्हें ख़ुदा तआला की तलाश है। और न ही वह इस तलाश का शौक रखते हैं। ऐसे लोग तो शैतान के पीछे चलने वाले हैं ही लेकिन ऐसे भी होते हैं जो ईमान का दावा करके अपने आप को मोमिन कहकर फिर शैतान के कदमों पर चलने वाले हैं या अपने आप कुछ अनुकरण करके या अल्लाह तआला की आगोश में आने की पूरी कोशिश न कर के शैतान के कदमों पर चलने वाले बन जाते हैं या बन सकते हैं। इसलिए अल्लाह तआला इस आयत में मोमिनों को सावधान कर रहा है, उन्हें फरमा रहा है कि शैतान के क़दमों पर न चलो। मोमिनों को यह चेतावनी है कि यह न समझो कि हम ईमान ले आए हैं, हम ने इस्लाम स्वीकार कर लिया इसलिए अब हम बेफिक्र हो गए हैं। वे समझते हैं कि शैतान के हमलों से और शैतान की पैरवी करने से हम निश्चिन्त हो गए हैं। नहीं। अल्लाह तआला फरमाता है कि अब भी शैतान का खतरा इसी तरह है। एक मोमिन भी शैतान के पंजे में गिरफ्तार हो सकता है जिस तरह एक ग़ैर मोमिन हो सकता है। इसलिए हर मोमिन का कर्तव्य है कि शैतान के हमलों से बचने के लिए अल्लाह तआला को हमेशा याद रखें।

शैतान ने तो पहले दिन से मनुष्य के पुत्र को नेकी के रास्ते से हटाने की अनुमति अल्लाह तआला से इस दावे के साथ मांगी थी कि मुझे इंसानों को बहकाने और पीछे चलाने की छूट मिल जाए तो मैं प्रत्येक रास्ते पर बैठकर उन्हें बहकाऊंगा और विभिन्न तरीकों से बहानों से उन्हें अपने पीछे चलाऊंगा और शैतान ने दावा किया था कि इंसानों में से अधिकतर मेरे पीछे चलेगी। अत: यह सब कुछ आजकल हम दुनिया में होता देख रहे हैं यहां तक कि ईमान का दावा करने वाले भी शैतान के पीछे चल रहे हैं जबकि अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ में चेतावनी दी थी, सावधान किया था। जैसे अल्लाह तआला फरमाता है कि

وَ مَنۡ يَّقۡتُلۡ مُؤۡمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ (सूर: अन्निसा: 22)

जो व्यक्ति किसी मोमिन की जानबूझकर हत्या कर दे तो उसकी सज़ा जहन्नम होगी। अब आजकल जो कुछ मुस्लिम दुनिया में हो रहा है। यह क्या है।? आपस में एक दूसरे को कत्ल कर के शैतान के पीछे ही चल रहे हैं। फिर सामूहिक रूप से अनुचित रूप से किसी की हत्या जो चरम पंथी अलग हमलों में करते हैं, किसी को मार रहे हों, यह सब शैतानी कर्म और जहन्नम की ओर ले जाने वाले हैं जबकि शैतान के बहकावे में आकर जन्नत में जाने के नाम पर यह सब कुछ किया जाता है। शैतान तो यह कहता है यह काम करो तुम जन्नत में जाओगे। अल्लाह तआला फरमाता है यह काम करोगे तो जन्नत में नहीं जाओगे जहन्नम में जाओगे क्योंकि तुम शैतान के पीछे चल रहे हो।

इसलिए अल्लाह तआला मोमिनों को फरमाता है कि अपने ऊपर हर समय नज़र रखो और देखते रहो कि तुम कहीं शैतान के कदमों पर तो नहीं चल रहे। छोटी-छोटी बातों का इनकार कर के शैतान के कदमों पर चल रहे हो या बड़े बड़े गुनाह करके शैतान के कदमों पर चल रहे हो। ज़रूरी नहीं कि सिर्फ चरम पंथी और कातिल ही शैतान के कदमों पर चल रहे हैं जिस का उदाहरण मैंने दिया है बल्कि इंसान जब अल्लाह तआला के ज़ाहिर में किसी छोटे से छोटे आदेश से भी दूर जाता है तो शैतान की ओर बढ़ रहा होता है अत: बहुत सावधान होने की ज़रूरत है। वास्तविक मोमिन बनने के लिए बहुत अधिक ध्यान की ज़रूरत है। शैतान जब हमला करता है और जब मनुष्य को बहकाता है तो इसका तरीका ऐसा नहीं है कि इंसान आसानी से समझ सकता है या शैतान जब मनुष्य को बहकाता है बुराइयों की प्रेरणा देता है अल्लाह तआला की आज्ञाओं की अवज्ञा की ओर ले जाता है तो खुल कर यह नहीं कहता कि यह करो, अवज्ञा करो, अल्लाह तआला से दूर जाओ। यह बुराईयां करो बल्कि नेकी की आड़ में बुराइयों की ओर ले जाता है। शैतान ने आदम को भी जब अल्लाह तआला के हुक्म से दूर हटाया था तो नेकी के हवाले से ही हटाया था।

यह आयत जो मैंने तिलावत की है यह इस बात पर भी प्रकाश डाल रही है कि बुराईयां कैसे फैलती हैं और कैसे बुराई एक से दूसरी जगह फैलते फैलते एक व्यापक क्षेत्र को अपनी चपेट में ले लेती है। आदमी जब शैतान के कदमों पर चलता है, एक कदम के बाद दूसरे कदम में जब इंसान अपने कदम जमाता है तो इसका अर्थ है कि बुराइयों को फैला रहा है। शुरुआत में एक बुराई ज़ाहरी तौर पर बहुत छोटी लगती है या मनुष्य समझता है कि इस बुराई से इसे या समाज को क्या नुकसान पहुंचाना है। लेकिन जब यह व्यापक क्षेत्र में फैल जाती है या बड़ी संख्या में लोग इसे करने लग जाते हैं या बुराई से आँखें बंद कर लेते हैं या समाज के डर से इसे बुराई कहने से डरते हैं या हीन भावना में आकर शायद उसके ख़िलाफ व्यक्त करना हमें समाज की नज़र में गिरा न दे, वे चुप हो जाते हैं या नहीं व्यवहार करते। इस समाज की बहुत सारी बातें हैं जो समाज में आज़ादी के नाम पर होती हैं सरकारें भी इसे स्वीकार कर लेती हैं लेकिन वे बुराईयां हैं।

फिर समाज में जैसे उन लोगों की दृष्टि में एक छोटी सी बुराई है कि पर्दा से महिला के अधिकार छीने जाते हैं। इस समाज में पर्दे के ख़िलाफ बहुत कुछ कहा जाता है उनकी नज़र में यह कोई बुराई नहीं। इस लिए यह कहते हैं इस बारे में शरीयत की आदेश की ज़रूरत नहीं थी। कुछ लड़कियां हीन भावना का शिकार होकर कि लोग क्या कहेंगे या उनके दोस्तों को यह पसंद नहीं है या स्कूल या कॉलेज में छात्र या शिक्षक कई बार मज़ाक उड़ा देते हैं तो पर्दे में ढीली हो जाती हैं। शैतान कहता है यह तो मामूली सी बात है तुम कौन सा आदेश को छोड़ कर अपनी पवित्रता को नष्ट कर रही है। समाज की बातों से बचने के लिए अपने दोपटे, स्कारफ, घूंघट उतार दो। कुछ नहीं होगा। बाकी काम तो आप इस्लाम की शिक्षा के अनुसार कर ही रही हो लेकिन उस समय पर्दा उतारने वाली लड़की और महिला को यह विचार नहीं रहता कि यह तो ऐसा आदेश है जिसका कुरआन में उल्लेख है। महिला की लज्जा इसका लज्जा वाला लिबास है। औरत की पवित्रता उसके पुरुषों से बिना कारण के मेल जोल से बचने में है। इस समाज में अल्लाह तआला की कृपा से ऐसी अहमदी लड़कियां भी हैं जो पुरुषों की ओर पर्दे पर आरोप पर उन्हें मुंह तोड़ जवाब देती हैं कि हमारा काम है हम जो पसंद करती हैं हम कर रही हैं। तुम हमें पर्दे उतारने पर मजबूर कर हमारी आज़ादी क्यों छीन रहे हो? हमें भी अधिकार है कि अपने कपड़े को अपने अनुसार पहनें और अपनाएं। लेकिन कुछ ऐसी भी हैं बावजूद अहमदी होने के यह कहती हैं कि समाज में पर्दा करना और दुपट्टा लेना बहुत मुश्किल है। हमें शर्म आती है। माता-पिता को भी बचपन से लड़कियों में ये बातें पैदा करनी चाहिए कि शर्म तुम्हें इस्लामी शिक्षा पर अनुकरण न करके आनी चाहिए न कि अल्लाह के आदेश को मानकर।

इस तरह लड़कों में भी मुक्त समाज के कारण से कुछ बुराइयां हैं जो चुपचाप प्रवेश कर जाती हैं और फिर जब एक बुराई में ऐसे लड़के शामिल हो जाते हैं तो दूसरी बुराइयाँ भी उनमें आनी शुरू हो जाती हैं उसमें भी शामिल हो जाते हैं।

अत: शैतान से बचने के लिए घरों में ही ऐसे मोर्चे बनाने की ज़रूरत है कि उसके प्रत्येक हमले से न केवल बचो बल्कि उसके हमले का ये जवाब भी दिया जाए। शैतान के प्यार को प्यार समझ कर उसे जीवन में प्रवेश न करें बल्कि हर समय इस्तिग़फ़ार करते हुए अल्लाह की शरण में आने की हर अहमदी को कोशिश करनी चाहिए। सबसे बड़ी शरण शैतान से बचने की अल्लाह तआला ही है। इसलिए इस बिगड़े हुए ज़माने में इस्तिग़फ़ार करते हुए अल्लाह तआला की शरण में आने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि इस्तिग़फ़ार ही वह माध्यम है जिससे अल्लाह की शरण में आदमी आ सकता है।

कोई इंसान भी जानते बूझते हुए किसी बुराई की तरफ नहीं जाता। यह प्रकृति के ख़िलाफ है कि एक बात का आदमी को पता हो कि इससे नुकसान होना है तो फिर भी इस चीज़ को करने की कोशिश करे। एक वास्तविक मोमिन को तो अल्लाह तआला ने वैसे भी खोलकर बुराई और अच्छाई के बारे में बता दिया है। इसलिए आदमी को बुराइयों और अच्छाइयों की अल्लाह तआला की दी हुई शिक्षा के अनुसार तलाश कर के उन से बचने और करने की कोशिश करनी चाहिए। शैतान को पता है कि जब तक इंसान ख़ुदा तआला की शरण में है उसकी सुरक्षा में है, यह उसे नुकसान नहीं पहुंचा सकता। इसलिए शैतान आदमी को उसके आश्रय से निकालकर उस किला से निकाल कर जिस में मानव सुरक्षित है फिर अपने पीछे चलाता है और स्पष्ट है कि अल्लाह तआला की शरण से निकालने के लिए पहले शैतान नेकियों का लालच देकर ही मनुष्य को निकालता है या नेकियों का लालच देकर ही एक मोमिन को अल्लाह तआला की शरण से निकाला जा सकता है। कई बार धर्म के नाम पर मानवीय सहानुभूति के नाम पर, दूसरे की मदद के नाम पर, पुरुष और महिला का आपस में परिचय पैदा होता है जो कई बार फिर बुरे परिणाम का कारण होता हैं इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसी महिलाओं

के घरों में जाने से मना करते थे जिनके पति घर पर नहीं हों और इस का कारण यह वर्णन फरमाया कि शैतान इंसान की रगों में खून की तरह दौड़ रहा है।(सुनन तिर्मज़ी किताब अर्रिज़ाअ बाब मा जाअ हदीस 1172) इसी आदेश में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक सिद्धांत इरशाद फ़रमा दिया कि "नामहरम" (जिन के आपस में इस्लामी शरीयत के अनुसार विवाह हो सकें।) कभी आपस में स्वतंत्र जमा न हों क्योंकि इससे शैतान को अपना काम करने का अवसर मिल सकता है।

फिर इस समाज में अहमदियों को विशेष रूप से सावधान रहने की ज़रूरत है, जहां आज़ादी के नाम पर लड़की लड़के का स्वतंत्र मिलना और अलग मिलना कोई बुराई नहीं मानी जाती।

फिर केवल नादान लड़के लड़कियों के कारण बुराइयां पैदा नहीं हो रही होतीं बल्कि यह भी देखने में आया है कि शादीशुदा लोगों में भी आज़ादी और दोस्ती के नाम पर घरों में आना-जाना बे रोक टोक आना जाना समस्याएं पैदा करता है और घर उजड़ते हैं। इसलिए हमें जिन पर अल्लाह तआला ने यह एहसान किया है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की ताकत दी है। इस्लाम के हर आदेश का ज्ञान हमें समझाया है, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अल्लाह के प्रत्येक आदेश पर बिना किसी प्रकार के प्रश्न और झिझक के पालन करना चाहिए।

बुराइयों से आजकल टीवी, इंटरनेट इत्यादि यही कुछ बुराईयां भी हैं। प्राय घरों की समीक्षा कर लें। बड़े से लेकर छोटे तक सुबह फजर की नमाज़ इसलिए समय पर नहीं पढ़ते कि देर रात तक या तो टीवी देखते रहे या इंटरनेट पर बैठे रहे,अपने कार्यक्रम देखते रहे। परिणाम स्वरूप सुबह आंख नहीं खुली। बल्कि ऐसे लोगों को ध्यान भी नहीं होता कि सुबह नमाज़ के लिए उठना है और यह दोनों बातें और इस प्रकार की व्यर्थ बातें ऐसी हैं कि केवल एक दो बार आप की नमाज़ें बर्बाद नहीं करती बल्कि जिन को आदत पड़ जाए उनका दैनिक की यह सामान्य बात है कि देर रात तक कार्यक्रम देखते रहेंगे या इंटरनेट पर बैठे रहेंगे और सुबह नमाज़ के लिए उठना उनके लिए मुश्किल होगा बल्कि उठेंगे ही नहीं बल्कि कुछ ऐसे भी हैं जो नमाज़ को महत्त्व ही नहीं देते।

नमाज़ जो एक बुनियादी बात है जिस को हर हालत में अदा करना चाहिए यहां तक कि युद्ध और कष्ट और बीमारी की हालत में भी। चाहे मनुष्य बैठ के नमाज़ पढ़े लेट कर पढ़े या युद्ध की स्थिति में या यात्रा के मामले में कम कर के पढ़े लेकिन बहरहाल पढ़नी है। और सामान्य परिस्थितियों में तो पुरुषों को जमाअत के साथ और महिलाओं को भी समय पर पढ़ने का हुक्म है। लेकिन शैतान केवल एक सांसारिक कार्यक्रम के लालच में नमाज़ से दूर ले जाता है और इसके अतिरिक्त इंटरनेट भी एक ऐसी चीज़ है जिस में विभिन्न प्रकार के जो कार्यक्रम हैं, फिर एपलीकेशन हैं या फोन आदि के माध्यम से या iPad के माध्यम से इन में डालता चला जाता है। इस पर पहले अच्छे कार्यक्रम देखे जाते हैं कैसे इस का आकर्षण attraction है। पहले अच्छा कार्यक्रम देखे जाते हैं फिर हर तरह के गंदे और चरित्र को ख़राब करने वाले कार्यक्रम भी देखे जाते हैं। कई घरों में इसलिए व्याकुलता है कि पत्नी के अधिकार भी अदा नहीं हो रहे और बच्चों के अधिकार भी अदा नहीं कर रहे क्योंकि पुरुष रात के समय टीवी और इंटरनेट पर बेहूदा कार्यक्रम देखने में व्यस्त रहते हैं और फिर ऐसे घरों के बच्चे भी उसी रंग में रंग जाते हैं और वे भी वही कुछ देखते हैं। इसलिए एक अहमदी परिवार को इन सभी बीमारियों से बचने की कोशिश करनी चाहिए।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मोमिनों को शैतान के हमलों से बचाने की कितनी चिंता होती थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कैसे अपने सहाबा को शैतान से बचने की दुआएं सिखाते थे और कैसी सार गर्भित दुआएं सिखाते थे। उसका एक सहाबा ने ऐसा उल्लेख किया है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें यह दुआ सिखलाई कि हे अल्लाह ! हमारे दिलों में मुहब्बत पैदा कर दे। हमारा सुधार कर दे और हमें सुरक्षा की राहों पर चला और हमें अंधेरे से मुक्ति देकर प्रकाश की ओर ले जा और हमें स्पष्ट और छुपी हुए अशलीलताओं से बचा और हमारे लिए हमारे कानों में हमारी आंखों में हमारी पत्नियों और हमारी संतानों में बरकत रख दे और हम पर रहमत के साथ लौट। सचमुच तू ही तौबा स्वीकार करने वाला और बार बार दयालु है। और हमें अपने उपकारों का शुक्र करने वाला और उनकी भलाई करने वाला और उन्हें स्वीकार करने वाला बना और हे अल्लाह हम पर उपकार पूर्ण कर के फरमा।

(सुनन अबू दाऊद किताबुस्सलात बाब तशह्हुद हदीस 969)

अत: यह दुआ है जो सांसारिक ग़लत मनोरंजन से भी रोकने के लिए है दूसरे सभी प्रकार की व्यर्थ बातों से रोकने के लिए है। शैतान के हमलों को रोकने के लिए है।

आज भी दुनिया में मनोरंजन के नाम पर विभिन्न बेहूदगियां हो रही हैं। जब इंसान कानों, आँखों में बरकत की दुआ करेगा, जब सुरक्षा प्राप्त करने के और अंधेरों से प्रकाश की ओर जाने के लिए दुआ करेगा, जब पत्नियों के हक़ अदा करने की दुआ करेगा, जब बच्चों की आंखों की ठंडक बनने की दुआ करेगा तो फिर व्यर्थ बातों और बेहूदगियों की ओर ध्यान अपने आप हट जाएगा और इस प्रकार एक मोमिन पूरे घर को शैतान से बचाने का माध्यम बन जाता है।

इसलिए जिस दौर में हम गुज़र रहे हैं और किसी एक देश की बात नहीं बल्कि पूरी दुनिया की यह हालत है। मीडिया ने हमें एक दूसरे के क़रीब कर दिया है और दुर्भाग्य से नेकियों में क़रीब करने के स्थान पर शैतान के पीछे चलने में क़रीब कर दिया है। ऐसी हालत में एक अहमदी को बहुत अधिक बढ़ कर अपनी स्थितियों पर नज़र रखने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला ने हमें एम.टी.ए प्रदान फरमाया है अल्लाह तआला ने हमें जमाअत के आध्यात्मिक, ज्ञान वर्धक कार्यक्रमों के लिए वेब साइट भी दे दी है। अगर हम इस ओर अधिक ध्यान करें हैं तो फिर हमारा ध्यान इस ओर रहेगा जिससे हम अल्लाह के क़रीब होने वाले होंगे और शैतान से बचने वाले होंगे।

मनोरंजन के लिए अगर दूसरे टीवी चैनल देखने भी हैं तो इस बात की सावधानी करनी चाहिए कि ख़ुद माता-पिता इस की सावधानी करें और बच्चों की भी निगरानी कि वे कार्यक्रम देखें जो शरीफ़ाना हों। जहां भी बेहूदगी और गंद है इससे बचें कि यह केवल अभद्रता और अवांछित बातों की ओर ले जाती हैं। उस तरफ ले जाते हैं जहां से अल्लाह तआला से दूरी पैदा होती है लेकिन इस बात को हर अहमदी घर अनिवार्य और आवश्यक बनाना चाहिए कि सभी घर के सदस्यों मिलकर हर हफ्ते कम से कम एम.टी.ए पर ख़ुत्बा ज़रूर सुना करें और इसके अतिरिक्त कम से कम एक घंटे दैनिक एम.टी ए के दूसरे कार्यक्रम भी देखें। जिन घरों में इस पर अनुकरण हो रहा है। वहाँ अल्लाह तआला की कृपा से नज़र आता है कि पूरा परिवार धर्म की ओर है। बच्चे भी धर्म सीख रहे हैं और बड़े भी धर्म सीख रहे हैं। इस पर जो भी पालन करेगा उसे नि:संदेह जहाँ धार्मिक लाभ होगा इससे शैतान से भी दूरी होगी। अल्लाह की निकटता पाने की ओर ध्यान होगा। इस से घरों की शान्ति भी मिलेगी और इसमें बरकत भी पैदा होगी जैसा कि अल्लाह तआला ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से हमें दुआ सिखाई।

एक माँ ने मुझे लिखा कि मेरा बेटा सत्रह साल तक तो ठीक रहा, नमाज़ें आदि भी पढ़ता था, मज्लिस के कार्यों में रुचि लेता था लेकिन अब बड़े होकर जब उसे थोड़ी आज़ादी मिली और उसके दोस्त ऐसे हैं जिनके कारण से वह धर्म से बिलकुल दूर हट गया। यह ठीक है कि एक उम्र में लड़कों पर माहौल का प्रभाव हो सकता है लेकिन अगर माता-पिता के बच्चों के साथ दोस्ताना संबंध हैं, अच्छे बुरे की तमीज़ उन्हें बताई जाए, घर का माहौल धार्मिक बनाया जाए और अब तो जहां के मैंने कहा कि अल्लाह तआला ने सांसारिक रूप से मनोरंजन के उपकरण दिए हुए हैं उन्हीं मनोरंजन के सामानों में तरबियत के सामान भी प्रदान कर दिए हैं। यह सब अगर एक साथ बैठकर देख रहे हों उनसे लाभ उठा रहे हों तो बच्चों को यह एहसास हो कि घर में इन बच्चों का महत्त्व है तो वे बाहर नहीं निकलेंगे, बेहूदगियों में नहीं पड़ेंगे, बाहर उन्हें शान्ति की तलाश नहीं होगी बल्कि अपने घरों में ही शान्ति देखेंगे।

फिर माता-पिता का भी कर्तव्य है कि बच्चों को मस्जिद से जोड़े, ज़ैली संगठनों के कार्यक्रम में शामिल कराएं।

यहां मैं ज़ैली संगठनों से भी कहूंगा और जमाअत के निज़ाम से भी बल्कि ज़ैली संगठनों से विशेष रूप से इस लिए कि उन्होंने अपने सदस्यों को संभालना है। प्रत्येक एक विशेष भाग है, अधिक आसानी से संभाल सकते हैं। ख़ुद्दाम ने ख़ुद्दाम को संभालना है। लज्ना ने लज्ना को संभालना है। विशेष कर के अत्फाल और युवा ख़ुद्दामों को संभालना ज़रूरी है। नासरात और युवा लज्ना को संभालना ज़रूरी है। ज़ैली तंज़ीमों की यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है कि उन्हें जमाअत के साथ मज़बूती से जोड़ें। ख़ुद्दाम अपने ऐसे ख़ुद्दाम की टीमें बनाएँ जो अलग स्वभाव के लोगों, युवाओं को अपने साथ जोड़ने वाले हों

लेकिन अधिकतर शिकायतें प्राय युवा लड़कियों को होती हैं कि लज्ना के संगठन में पंद्रह साल के बाद सब लड़कियां जो हैं वे लज्ना में शामिल होती हैं, एक ही संगठन है और कुछ बड़ी आयु की महिलाएँ बच्चियों से जो व्यवहार रखती हैं और वे बच्चियों को अगर धर्म से दूर नहीं तो मज्लिस के कार्यक्रमों से अवश्य दूर कर रही होती हैं। इसलिए उहदेदार अपने व्यवहार ऐसे रखें कि प्यार से उन्हें धर्म के साथ जोड़ें, मस्जिद के साथ जोड़ें, अपनी मज्लिस के साथ जोड़ें, जमाअत के

साथ जोड़ें वरना शैतान तो इस ताक में है कि जहां कोई कमज़ोर हो, जहां किसी को किसी अधिकारी के ख़िलाफ कोई शिकवा पैदा हुआ और मैं हमला करके उसे अपने काबू में करूं।

हम ने जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार किया है तो इसलिए कि इस युग में मसीह मौऊद के माध्यम से शैतान के साथ अंतिम लड़ाई है लेकिन अगर हम अपने व्यवहार से शैतान को मौका दे रहे हैं कि हमारे बच्चों और युवाओं को अधिकारियों के व्यवहार के कारण से शैतान सहानुभूति जता कर अपने काबू में कर ले तो ऐसे अधिकारी चाहे वे पुरुष हैं या औरतें मसीह मौऊद की सहायक नहीं बल्कि शैतान के सहायक हैं। परन्तु प्रत्येक अधिकारी को विशेष रूप से यह कोशिश करनी है कि इस ने अपने आप को शैतान के हमलों से बचाना है और जमाअत के लोगों को भी बचाना है।

इसलिए अल्लाह तआला ने जो फज़ल किया है इसे समझने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने की ज़रूरत है। इस तरह हर संवेदनशील, बुद्धि वाले अहमदी को, युवा लड़कों और लड़कियों को यह ध्यान में रखना चाहिए कि उन पर अल्लाह तआला ने फज़ल फरमाते हुए यह उपकार किया है कि उन्हें अहमदियत स्वीकार करने की शक्ति दी या अहमदी घराने में पैदा किया। मसीह मौऊद को मानने की शक्ति दी जिसके आने की ख़ुश ख़बरी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी थी जिसने इस ज़माने में शैतान को पराजित करना है। इसलिए उस ने किसी अपने से बड़े या तथाकथित बुज़ुर्ग या अधिकारी के व्यवहार के कारण अपने आप को धर्म से दूर नहीं ले जाना बल्कि शैतान को हराने में मसीह मौऊद का मददगार बनना है और इसके लिए अल्लाह तआला से दुआ करनी है। अल्लाह तआला फरमाता है कि मैं "समीअ" (बहुत सुनने वाला) और "अलीम" (बहुत जानने वाला) हूँ और ज्ञान रखने वाला हूँ। जानता हूँ कि तुम शैतान के हमलों का कितना भय है। जानता हूँ कि तुम इस से बचने के लिए प्रयास और दुआ कर रहे हो इसलिए मैं तुम्हारी दुआओं को सुनूँगा। तुम दुआ करो। ऐसे माहौल से भी सुरक्षित रहो जो कई बार ऐसे विचार पैदा कर देता है। इस दुआ के साथ अपने आप को इस माहौल से भी बचाओ जिससे इंसान शैतान की बातों में आ जाता है और दुआ करो कि तुम शैतान के हमलों से हमेशा सुरक्षित रहो। अल्लाह तआला फरमाता है कि नेक निय्यत से की गई कोशिश और दुआएं अल्लाह के यहां स्वीकार होती हैं और शैतान से तुम सुरक्षित रहोगे।

इसी तरह विशेष रूप से जिन के ज़िम्मे धार्मिक सेवा का काम किया गया है, जमाअत के लोगों के मार्गदर्शन और प्रशिक्षण का काम जिन को सौंपा है, अपने कथन तथा कर्म को अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार ढालने की कोशिश करें और अल्लाह तआला से शुद्ध होकर दुआ करें कि अल्लाह उनके कारण से किसी को शैतान की झोली में न जाने दे बल्कि किसी तरह भी कोई जमाअत का व्यक्ति भी शैतान के पीछे चलने वाला न हो। अल्लाह तआला फरमाता है कि ऐसे शुद्ध होकर की गई दुआ मैं तुम्हारी भी सुनूंगा और उन लोगों की भी मार्गदर्शन करता रहूंगा, जिन पर शैतान हमले करता है ताकि तुम इन हमलों से बच सको। वरना अल्लाह की तआला की मदद और उसके आगे झुके बिना तुम्हारा शैतान के हमले से बचना संभव नहीं है। तो अल्लाह तआला की मदद की तलाश करो।

जैसा कि मैंने कहा कि शैतान ने तो अल्लाह तआला से कहा था कि यदि तू मुझे ज़बरदस्ती न रोके और मुझे ढील दे तो मैं मनुष्य को बहकाऊंगा और इसके लिए भरपूर कोशिश करूंगा। इस कोशिश में शैतान कहां तक जाता है। एक साधारण मोमिन तो एक तरफ रहा शैतान तो अल्लाह तआला के वलियों को भी अंत समय तक काबू में करने की कोशिश करता है। यह कोशिश यह होती है कि मरते-मरते भी कोई ऐसा काम कर जाएं जहां से यह मेरे काबू में आ जाएं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मज्लिस में किसी ने ख़वाब का वर्णन किया। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़वाब सुनने के बाद यह फरमाया कि यह ख़वाब एक अजीब बात पर समाप्त हुआ है। शैतान आदमी को तरह तरह के उदाहरणों से धोखा देना चाहता है मगर लगता है कि तुम्हारा परिणाम बहुत अच्छा है क्योंकि इस रउया का अंत अच्छी जगह पर हुआ है।" जो व्यक्ति अपना सपना सुना रहा था इस के सपने का जो अंत था इससे यह नज़र आता था कि वहाँ अंत में अंजाम यह हुआ कि शैतान से बच गया। शैतान ने हमला किया था। फिर हज़रत मसीह मौऊद फरमाते हैं कि प्राय ऐसा हुआ है कि शैतान के हमलों से यदि मनुष्य बचने की कोशिश करे तो बचता है या अल्लाह की कृपा हो तो होता है तो आपने फ़रमाया कि "एक वली उल्लाह का वर्णन लिखा है जब उनका निधन हुआ तो उनका अंतिम शब्द था कि अभी नहीं अभी नहीं।" जब वह वली अल्लाह मरने लगे तो मरते-मरते जो उनकी ज़बान पर था वह शब्द यह थे कि अभी नहीं अभी नहीं। एक उनका मुरीद जो निकट था यह शब्द सुनकर बड़ा हैरान हुआ और उनकी मृत्यु के बाद रात दिन रो रोकर दुआएं मांगने लगा कि यह क्या मामला है जो यह वली उल्लाह यह कहते रहे कि अभी नहीं अभी नहीं। ख़ैर एक दिन ख़वाब में उन वली उल्लाह से मुलाकात हो गई। उनसे उसने पूछा कि यह अंतिम शब्द क्या थे और आपने क्यों यह कहा था? अभी नहीं अभी नहीं। उस वली उल्लाह ने कहा कि शैतान चूंकि मौत के समय प्रत्येक व्यक्ति पर हमला करता है उसके ईमान का नूर अंत समय पर छीन ले इसलिए वह आदत के अनुसार मेरे पास आया और मुझे मुर्तद करना चाहा नेकी से दूर हटाना चाहा और मैंने जब उसका कोई वार चलने नहीं दिया तो मुझे कहने लगा कि तू मेरे हाथ से बच गया। इसलिए मैंने कहा था कि अभी नहीं, अभी नहीं। अर्थात जब तक मैं मर न जाऊं मुझे तुझ से संतोष नहीं हो सकता। (मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 306 प्रकाशन 1985 ई यू. के) बेशक तू बहका रहा है हर ढंग से बच रहा हूं लेकिन जब तक जान है, तब तब तू बहकाता रहेगा जब तक मेरी जान नहीं निकल जाती तब तक मैं यह नहीं कह सकता कि मैं तेरे से बच गया।

तो यह है वह गुणवत्ता औलिया उल्लाह की जो नमूने उन्होंने हमारे सामने स्थापित किए। तो शैतान की यह कोशिश होती है कि किसी तरह अल्लाह के वलियों के भी अन्जाम बुरे करके उन्हें जहन्नम में डलवाए। अत: एक मोमिन के लिए तो बड़ा भय का स्थान है। एक साधारण आदमी के लिए लापरवाही का कोई क्षण जो है उसे शैतान के कब्ज़े में ले जा सकता है और इसके लिए हमेशा इस्तिग़फार (पश्चाताप) और माफी भी करते रहना चाहिए।

फिर शैतान के आदमी पर हमले की कोशिशों का उल्लेख करते हुए एक और स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"शैतान इंसान को गुमराह करने के लिए और उसके कार्यों को फासिद बनाने के लिए हमेशा अवसर में लगा रहता है। यहां तक कि वह भलाई के कामों में भी गुमराह करना चाहता है और किसी न किसी प्रकार का फसाद डालने की कोशिश करता है।" किसे प्रकार? जैसे "नमाज़ पढ़ता है तो उसमें भी दिखावा आदि उपद्रव को मिलाना चाहता है।" इंसान नमाज़ पढ़ रहा है नेकी का काम है लेकिन शैतान इस में उसके दिल में यह डालना चाहता है कोई न कोई दिखावे की बात डालना चाहता है ताकि फसाद पैदा हो, ताकि नमाज़ शुद्ध न रहे। फिर फरमाया कि "एक इमामत कराने वाले को भी इस बला से पीड़ित करना चाहता है। इसलिए इस के हमले से कभी निडर नहीं होना चाहिए क्योंकि इस हमले दुराचारों अनाचारों पर तो खुले खुले होते हैं" जो अनैतिक और संकीर्ण लोग हैं, दुनिया में डूबे हुए हैं, बिगड़े हुए हैं, धर्म से हटे हुए हैं, उन पर तो खुले-खुले हमले होते हैं "वह तो उसका मानो शिकार हैं लेकिन नेकों पर भी हमला करने से वह नहीं चूकता।" जो नेक लोग हैं ज़ाहिद हैं उन पर भी हमला करने से नहीं हटता "और किसी न किसी रंग में मौका पाकर उन पर हमला कर बैठता है।" फरमाया कि "जो लोग अल्लाह के फज़ल के नीचे होते हैं और शैतान की सूक्ष्म से सूक्ष्म कुटिलता की युक्ति से अवगत होते हैं वे तो बचने के लिए अल्लाह तआला से दुआ करते हैं लेकिन जो अभी कच्चे और कमज़ोर होते हैं वे कभी कभी पीड़ित हो जाते हैं।" (मल्फूज़ात भाग 6 पृष्ठ 426 प्रकाशन 1985 ई यू. के) तो मोमिन को हर समय अल्लाह तआला से दुआ और इस्तिग़फ़ार करना चाहिए कि वह शैतान की हर बुराई से हमें बचाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस्तिग़फ़ार की ओर ध्यान दिलाते हुए एक जगह फरमाते हैं कि

"अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए इस्तिग़फ़ार का प्रावधान कराया है ताकि इंसान प्रत्येक गुनाह से चाहे वह प्रकट में हो या भीतर का, चाहे वह जानता हो या न हो और हाथ और पैर और ज़बान और नाक और कान और आंख और सभी प्रकार के गुनाहों से माफी करता रहे।" फरमाया कि "आजकल आदम अलैहिस्सलाम की यह दुआ पढ़नी चाहिए। वह दुआ है।

رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۖ وَ اِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَ تَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ

(अल्आराफ: 24) (मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 275 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अर्थात कि हे हमारे रब हम ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया है यदि तू हमें न क्षमा करेगा और हम पर दया न करेगा तो हम घाटा उठाने वालों में से हो जाएंगे।

फिर एक जगह हमें समझाते हुए आपने फरमाया कि

"प्रियो ! ख़ुदा तआला के आदेशों को तुच्छ न देखो। वर्तमान दर्शन का ज़हर तुम को प्रभावित न करे। एक बच्चे की तरह बन कर उस की आज्ञाओं के नीचे चलो। नमाज़ पढ़ो। नमाज़ पढ़ो कि सभी शक्तियों की चाबी है और जब तू दुआ के लिए खड़ा हो तो ऐसा न कि मानो रस्म अदा कर रहा है। बल्कि दुआ से पहले जैसे ज़ाहिर में वुज़ू करते हो ऐसे ही भीतर भी वुज़ू करो और अपने अंगों को ग़ैर अल्लाह के विचार से धो डालो।" ऊपरी तौर पर तो पानी से अपने अंगों को धोते हो। अपने मन को अपने अंगों को हर प्रकार के अल्लाह के ग़ैर धो डालो। "तब तुम दोनों वज़ुओं के साथ खड़े हो जाओ और नमाज़ में बहुत दुआ करो और रोना और गिड़गिड़िना अपनी आदत करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। सच्चाई धारण करो, सच्चाई धारण करो, कि वह तुम्हें देख रहा है। हमेशा हर मामले में सच्चाई धारण करो। हर मामले में यह हो कि अल्लाह मुझे देख रहा है। वह तुम्हें देख रहा है कि तुम्हारे दिल कैसे हैं क्या मनुष्य उसको भी धोखा दे सकता है? क्या उसके सामने भी चालाकियां चलती हैं? बहुत अधिक बुरी किस्मत वाला है आदमी अपने अनैतिक कार्य इस सीमा तक पहुंचाता है कि मानो ख़ुदा नहीं। तब वह बहुत जल्द मार दिया जाता है और ख़ुदा तआला उसकी कुछ भी परवाह नहीं होती।" फरमाया "प्रियो ! इस दुनिया का केवल तर्क एक शैतान है और इस दुनिया के खाली दर्शन एक शैतान है।" केवल तर्क और logic और कारण, ये जो चीज़ें हैं ये सब शैतान की बातें हैं। केवल यही बातें नहीं हैं अल्लाह को तलाश करना होगा। फरमाया कि "ईमान के नूर को निहायत स्तर तक घटा देता है।" केवल तर्क और दर्शन के ऊपर चलोगे तो ईमान का नूर घट जाएगा। "और बेबाकियाँ पैदा करता है और क़रीब क़रीब नास्तिकता तक पहुँचाता है अत: तुम अपने आप को बचाओ और ऐसा दिल पैदा करो जो ग़रीब और दरिद्र हो और बिना चूं चुरा की आज्ञाओं को मानने वाले हो।" बिना किसी चूं-चपड़ के अल्लाह तआला की आज्ञाओं को मानने वाले बनो। "जैसा कि बच्चा अपनी मां की बातों को मानता है। पवित्र कुरआन की शिक्षाएं तक्वा के उच्च स्तर तक पहुँचाती हैं। उनकी तरफ कान धरो और उनके अनुसार अपने आप को बनाओ।"

(इज़ाला औहाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 549)

अल्लाह तआला करे कि हम शैतान के कदमों पर चलने से बचने वाले हों। ख़ुदा तआला के आगे झुकते हुए, उस से मदद मांगते हुए उसकी आज्ञाओं पर चलने वाले हों,पवित्र कुरआन की शिक्षा का पालन करने वाले हों और इस बात पर धन्यवाद करने वाले हों कि अल्लाह तआला ने हमें अपने उस फरस्तादे को मानने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाई जिस ने शैतान को पराजित करना है। अल्लाह तआला करे कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए हुए बैअत के वादे का हक अदा करते हुए शैतान के हर हमले को असफल और नामुराद करने वालों में शामिल हो जाएं। अल्लाह तआला हमें इसकी ताकत प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

* यह इस बात का संकेत है कि जब इंसान सच्चे धर्म पर हो तो अच्छे कर्म करने से ख़ुदा तआला की ओर से एक पुरस्कार पाता है। इसी तरह अल्लाह तआला की आदत है कि सच्चे धर्म वाला केवल इस सीमा तक ठहराया नहीं जाता जिस हद तक वह अपनी कोशिश से चलता है और अपनी चेष्ठा से कदम रखता है बल्कि जब यह कोशिश हद तक पहुंच जाता है और मानव शक्तियों का काम समाप्त हो जाता है तब अल्लाह तआला की इनायत उसके अस्तित्व में अपना काम करती है और अल्लाह तआला की हिदायत इस के ज्ञान और कर्म और अनुभूति में वृद्धि करती है जिस स्तर तक वह अपनी कोशिश से नहीं पहुंच सकता था जैसा कि इस स्थान में भी अल्लाह तआला फरमाता है। وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا

अर्थात जो लोग हमारे मार्ग में कोशिशें करते हैं और जो कुछ उन्हें और उनकी शक्तियों से हो सकता है करते हैं तब अल्लाह तआला की हस्ती उनका हाथ पकड़ती है और जो काम उन से नहीं हो सकता था वह आप कर दिखलाती है। इसी में से।

* अब्दुल हकीम खान के निकट जहाँ तक उस की तहरीर से समझा जाता है स्वधर्म त्याग के लिए यह भी एक बहाना है कि जिस व्यक्ति को अपनी राय में इस्लाम की सच्चाई के काफी सबूत नहीं मिले वह इस्लाम से मुर्तद हो कर भी मुक्ति पा सकता है क्योंकि इस्लाम की सत्यता पर उसे तसल्ली नहीं हुई मगर इस का वर्णन करना चाहिए था कि किस हद तक दलीलों का पूरा होना उसके पास है। इसी में से।

☆ ☆ ☆

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान में दर्जा दोयम (द्वित्तीय) के लिए एलान

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान में लिपिक के रूप में सेवा करने वाले इच्छुक दोस्तों के लिए लिखा जाता है कि

1. इच्छुक की आयु 25 साल से कम होनी चाहिए। और इच्छुक की शिक्षा कम से कम10+2 सैकण्ड डिवीज़न 45% प्रतिशत नम्बर प्राप्त किए हों। इस से अधिक शिक्षा प्राप्त होने पर भी कम से कम सैकण्ड डिवीज़न या इस से अधिक नम्बर हों।

2. इच्छुक का अच्छी लिखाई वाला होना आवश्यक है और उर्दू Inpage कम्पोज़िन्ग जानता हो और रफतार कम से कम 25 शब्द प्रति मिन्ट हों।

3. केवल वे उम्मीदवार सेवा के योग्य होंगे जो सदर अंजुमन अहमदिया की तरफ से लिपिकों के लिए लिए जाने वाली परीक्षा और इन्ट्रवियू में पास होंगे।

4. जो दोस्त सदर अंजूमन अहमदिया में लिपिक के रूप में सेवा करने के इच्छुक हों और ऊपर वर्णित शर्तों को पूरा करते हों वे अपने निवेदन दे सकते हैं।

फार्म नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान से मंगवा लें अपना फार्म भर कर नज़ारत दीवान में भिजवा दें। फार्म मिलने पर परीक्षा का आयोजन किया जाएगा। इस ऐलान के दो महीना के अन्दर अन्दर जो फार्म दफतर में जमा होंगे उन्हीं पर विचार किया जाएगा।

5. परीक्षा कमीशन कारकुन दर्जा दोयम का सिलेबस निम्नलिखित है। प्रत्येक में पास करना अनिवार्य है।

☆ पवित्र कुरआन सादा पढ़ना पहला पारा।

☆ चालीस जवाहर पारे, (पुस्तक) अरकाने इस्लाम और नमाज़ अनुवाद सहित।

☆ कश्ती नूह बरकाते दुआ धार्मिक ज्ञान।

☆ अहमदियत की आस्थाओं पर निबन्ध।

☆ नज़म दुर्रे समीन(शाने इस्लाम)

☆ अंग्रेज़ी 10+2 की योग्यता अनुसार।

☆ हिसाब 10+2 की योग्यता अनुसार।

6. लिखित परीक्षा में पास करने वालों का इन्ट्रवियू होगा। सेवा के लिए इन्ट्रवियू में पास करना अनिवार्य है।

7. लिखित तथा इन्ट्रवियू में पास होने पर इच्छुक का नूर अस्पताल कादियान में मेडिकल चेक अप होगा वही इच्छुक सेवा के योग्य होंगे जो नूर अस्पताल के मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत वाले और तन्दुरुस्त होंगे।

8. यदि किसी उम्मीद वार को जमाअत की किसी पोस्ट पर चुना जाता है तो इस रूप में उस को कादियान में अपने रहने की व्यवस्था स्वंय करनी होगी।

9. कादियान आने जाने के सफर ख़र्च इच्छुक के अपने होंगे।

नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

मोबाइल: 09815433760, 09464066686, दफतर01872-501130

ई मेल: nazaratdiwanqdn@ qdn

पृष्ठ 2 का शेष

होना पड़ेगा अत: एक मुसलमान के लिए इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं कि या तो वह ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु हुई माने या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को छोड़ दे और ईसाई हो क्योंकि अगर ईसा अलैहिस्सलाम जीवित हैं तो ईसाई बिगड़ ही नहीं सकते उनका बिगड़ना हज़रत मसीह की मृत्यु के बाद निर्दिष्ट है। यह ऐसी मोटी बात है कि इसमें किसी लम्बे चौड़े झगड़े की जरूरत ही नहीं। सीधी सादी बात है कि हज़रत मसीह कहते हैं हे ख़ुदा! जब तूने मुझे मौत दे दी तो उसके बाद ईसाई बिगड़े हैं पहले नहीं। अब अगर ईसाई बिगड़ चुके हैं तो ईसा अलैहिस्सलाम मर चुके हैं और अगर ईसाई नहीं बिगड़े तो वास्तव में कहा जा सकता है कि ईसा अलैहिस्सलाम जीवित हैं लेकिन अगर मानना पड़ेगा कि ख़ुदा तआला के पसंदीदा बन्दे मुसलमान नहीं बल्कि ईसाई हैं।

(शेष.....)

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 23 June 2016 Issue No. 15

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : (0091) 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

ईदुल फ़ित्र
हर्ष एवं उल्लास का दिन

ईदुल-फ़ित्र — ईदुल-फ़ित्र रमज़ान उल-मुबारक के महीने के बाद एक धार्मिक उल्लास का त्योहार है। यह इस्लामी कैलंडर के दसवें महीने शव्वाल के पहले दिन मनाया जाता है। यह ईद रमज़ान के पवित्र महीने के रोज़ों की पूर्ति और इस महीने में की जाने वाली इबादत की ख़ुशी में मनाई जाती है। यह ऐसा इस्लामी त्यौहार है जो अपने दामन में अल्लाह तआला की रहमत, आपसी प्रसन्नता और परस्पर प्रेम का सामान लिए होता है। ईद इस्लामी जगत तथा सारे संसार के लिए सच्ची प्रसन्नता का अवसर है। इसलिए मुसलमान इस दिन का विशेष रूप से आयोजन करते हैं।

ईदुल फ़ित्र कब मनाई जाती है — ईद रमज़ान का चांद डूबने और ईद(शव्वाल) का चांद नज़र आने पर उसके अगले दिन चांद की पहली तारीख़ को मनाई जाती है। इस्लामी कैलेन्डर में दो ईदों में से यह एक है (दूसरी ईद को ईदुल अज़हिया या बकरीद कहा जाता है)

पहली ईदुल फ़ित्र — पहली ईदुल फ़ित्र हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सन 624 ईसवी में बदर के युद्ध के बाद मनाई थी। इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब मक्का से मदीना हिजरत (स्थानांतरण) करके आए तो उस समय मदीना के लोग वर्ष में दो दिन ख़ुशी के मनाते थे। इन दोनों दिनों में ख़ूब खेल-कूद होता था। और गाने-बजाने की सभाएं होती थीं। परन्तु हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस क्रम को अल्लाह तआला के आदेश से समाप्त कर दिया और कहा कि अल्लाह तआला के आदेश से इन दो दिनों के स्थान पर दो ख़ुशी के दिन (ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हिया) निर्दिष्ट किए। (अबू दाऊद)

ईद का उद्देश्य — ईद मूल रूप से भाईचारे को बढ़ावा देने वाला त्योहार है। इस त्योहार को सभी आपस में मिल के मनाते है और ख़ुदा से सुख-शांति और बरकत के लिए दुआएं मांगते हैं। पूरे विश्व में ईद की खुशी पूरे हर्षोल्लास से मनाई जाती है। रोज़ों की समाप्ति की खुशी के अतिरिक्त इस ईद में मुसलमान अल्लाह का धन्यवाद इसलिए भी अदा करते हैं कि अल्लाह तआला ने उन्हें महीने भर के रोज़े रखने की शक्ति दी। ईद के समय बढ़िया खाने के अतिरिक्त नए कपड़े भी पहने जाते हैं और परिवार और दोस्तों के बीच तोहफ़ों का आदान-प्रदान होता है। सिवैय्यां इस त्योहार में विशेष रूप से घरों में पकाई जाती है जिसे सभी बड़े चाव से खाते हैं।

ईद के दिन किए जाने वाले कार्य — ईद के दिन स्नान करना, यथासामर्थ्य नए और अच्छे वस्त्र पहनना, ख़ुशबू लगाना, मित्रों और पड़ोसियों से मिलना, ख़ुशियां मनाना, आतिथ्य करना और सीमा में रहते हुए प्रसन्नता का प्रकटन करना इस दिन के प्रिय कार्य हैं। इस दिन के बारे में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदेश है "लिकुल्ले क़ौमिन ईदन व हाज़ा ईदिना" (मुस्लिम) अर्थात् प्रत्येक जाति के लिए प्रसन्नता मनाने का दिन है और यह हमारे ख़ुशी मनाने का दिन है।

ईद के दिन रोज़ा रखना हराम अर्थात् मना है। यदि कोई व्यक्ति इस दिन प्रसन्नता का प्रकटन करने के स्थान पर रोज़ा रख कर स्वयं को संयमी और नेक प्रकट करने की चेष्टा करे तो ऐसा व्यक्ति अल्लाह तआला की दृष्टि में गुनाहगार है। ईद के शिष्टाचार में से यह है कि आदमी ईदुल फित्र में नमाज़ के लिए निकलने से पहले कुछ खाकर जाए और उत्तम है कि वह कुछ खजूरें खा ले। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी सुन्नत के द्वारा इस बात की मुसलमानों को शिक्षा दी। हदीस की प्रसिद्ध पुस्तक बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से उल्लेखित है कि उन्होंने कहा : अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ईदुल फित्र के दिन नहीं निकलते थे यहाँ तक कि कुछ खजूरें खा लेते थे ... और उन्हें ताक़ (विषम) संख्या में खाते थे।

(बुखारी, हदीस संख्या : 953)

ईद के दिन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ईदगाह में एक रास्ते से जाते और दूसरे रास्ते से वापस आते थे। इस प्रकार ईद की ख़ुशी में अधिक से अधिक लोगों को सम्मिलित होने का अवसर मिलता और एक-दूसरे को ख़ुशी एवं प्रसन्नता प्रकट करने का सौभाग्य मिलता। हदीस में वर्णित है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ईद के दिन रास्ता बदल देते थे। (बुख़ारी हदीस संख्या : 986)

ईद की नमाज़ और तक्बीरें — ईद की दो रकअत नमाज़ मुसलमानों पर वाजिब है। ईद की नमाज़ ख़ुत्बे से पहले होती है। इसलिए इसकी अज़ान नहीं होती। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ईद की नमाज़ की पहली रकअत में सात तक्बीरें और दूसरी रकअत में पांच तक्बीरें पढ़ा करते थे।

(तिरमिज़ी किताबुल ईदैन)

इसको पढ़ने का तरीका इस प्रकार है। सफ़बन्दी के बाद ज़बान या दिल से नीयत करें। जब इमाम अल्लाहो अकबर कहे तो दोनों हाथ कन्धे तक उठाकर बांध लें और जो दुआ सब नमाज़ों में पढ़ी जाती है पढ़ें, इसके बाद इमाम की दूसरी तक्बीर से छठी तक्बीर तक हाथ उठा कर छोड़ दें जब इमाम सातवीं तक्बीर कहे तो फिर हाथ बांध लें। इसी प्रकार दूसरी रकअत में इमाम की दूसरी तक्बीर से चौथी तक्बीर तक हाथ उठा कर छोड़ दें जब इमाम पांचवीं तक्बीर कहे तो फिर हाथ बांध लें।

नमाज़ पढ़ने के बाद ख़ुत्बा सुनना अनिवार्य है। ख़ुत्बा भी नमाज़ का ही भाग है। यह ख़ुत्बा सुन्नत है।

सद्क़ा फ़ित्र अदा करना — इदुल फ़ित्र के बारे में एक प्रमुख कार्य सद्क़ा फ़ित्र का अदा करना है। रोज़ों के समय आदमी से जो भूल-चूक या ग़ल्तियां होती हैं उनको दूर करने के लिए हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सद्क़ा फ़ित्र का आदेश दिया है। हज़रत इब्ने अब्बासरज़ि. से वर्णित है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सद्क़ा फ़ित्र रोज़ों को व्यर्थ और गन्दी बातों से पवित्र करने के लिए दरिद्रों की रोज़ी के लिए निर्दिष्ट किया है।

(अबू दाऊद हदीस संख्या 1609)

सद्क़ा फ़ित्र ईद की नमाज़ से पहले अदा करना अनिवार्य है और यह रमज़ान में ही दे दिया जाए तो उत्तम है। सद्क़ा फ़ित्र का देना प्रत्येक मुसलमान स्त्री, पुरुष, छोटे, बड़े यहां तक कि ईद की नमाज़ से पहले पैदा हुए बच्चे पर भी अनिवार्य है। एक व्यस्क स्त्री पुरुष पर एक साअ (एक अरबी पैमाना) अर्थात् लगभग ढाई किलोग्राम अनाज अथवा उसके बराबर राशि सद्क़ा फ़ित्र देना अनिवार्य है।

ईद की ख़ुशियों में ग़रीबों को न भूलें — ईद प्रसन्नता एवं हर्ष का दिन है। यह दिन इस बात को भी प्रकट करता है कि हम अपने समाज में ग़रीबों और दरिद्रों को अपनी ख़ुशियों में विशेष रूप से सम्मिलित करें। तीस दिन तक रोज़ों में भूखे प्यासे रह कर ग़रीबों के दु:ख दर्द का व्यक्ति स्वयं अनुभव करता है। इसलिए इस दिन अपनी प्रसन्नता की अभिव्यक्ति में यथा-शक्ति ग़रीबों और दरिद्रों को सम्मिलित करें। उन्हें इस दिन उन्हें अपने घरों में बुलाना चाहिए और स्वयं भी उनके यहां जाना चाहिए। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़रीबों का विशेष रूप से ध्यान रखने का आदेश दिया है। हज़रत अबू हुरैरारज़ि. वर्णन करते हैं कि हज़रत मुहम्मद आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा विधवाओं ओर दरिद्रों का ध्यान रखने वाला अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने वाले के समान है। वर्णन करने वाले कहते हैं कि मेरा विचार है कि आपने यह भी कहा कि वह उस इबादत करने वाले की तरह है जो सुस्त नहीं होता और उस रोज़ा रखने वाले की तरह है जो कभी रोज़ा नहीं छोड़ता। (बुख़ारी हदीस संख्या 5353)

इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब का सन्देश - अहमदिया मुस्लिम जमाअत के वर्तमान ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने 2010 ई. की ईदुल फ़ित्र के अवसर पर अपने विश्वव्यापी सन्देश में कहा - "दुखी मानवता और विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत और इस्लामी जगत को सदैव अपनी दुआओं में याद रखें और अपने लिए भी दुआएं करें कि अल्लाह तआला ने रमज़ान में जिन नेकियों के करने का सामर्थ्य दिया है भविष्य में उन पर दृढ़ रखे। अल्लाह तआला प्रत्येक को अपने लिए भी, दुखी मानवता के लिए भी उन दुआओं का सामर्थ्य प्रदान करे जो उसके यहां स्वीकार्य हों। अल्लाह तआला सदैव आप सब का सहायक हो। आमीन।"

इस ईद की प्रत्येक को हार्दिक शुभकामनाएं।

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad